शिक्षा स्नातक

कोर्स का शीर्षक: P.2.2 B हिन्दी

सेमेस्टर: II

क्रेडिट: 2

अधिकतम अंक: 50 (बाह्य: 35 आंतरिक: 15)

संसर्ग सप्ताह 15

पाठ्यक्रम- परिचय

प्रस्तुत पाठ्यक्रम प्राग्विद्यालयी शिक्षकों में विद्यालय के माध्यमिक एवं सेकेंडरी स्तर पर भाषा और साहित्य के सम्बन्ध का बोध विकसित करने, साहित्य शिक्षण की बारीकियों- साहित्य के विविध रूपों, विधियों, युक्तियों की समझ विकसित करने का प्रयास है। साथ ही यह समझने में भी उनकी मदद करता है कि प्रत्येक विद्यार्थी के आस्वाद का धरातल अलग- अलग होता है और ऐसे में शिक्षक की क्या भूमिका होनी चाहिए। यह गद्य और पद्य शिक्षण के साथ- साथ व्याकरण की बारीकियों को समझने एवं उसके शिक्षण पर भी बल देता है । शिक्षण के दौरान प्रयोग किए जा सकने वाले संसाधनों, सहाय्य सामग्री विशेषकर सूचना- प्रौद्योगिकी के प्रसार के इस युग में ई- संसाधनों की उपयोगिता एवं उनके अनुप्रयोग की भी चर्चा करता है। साथ ही शिक्षण उपरान्त अधिगम- मूल्यांकन पर भी ध्यान केन्द्रित करता है। अंत में दिया गया प्रायोगिक कार्य प्राग्विद्यालयी शिक्षकों में सृजनात्मकता के विकास के साथ - साथ कक्षा- शिक्षण की तैयारी पर भी ज़ोर देता है।

अधिगम प्रतिफल :

पाठ्यक्रम की समाप्ति के उपरान्त विद्यार्थी

1. हिन्दी भाषा एवं साहित्य शिक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रभावी साधनों एवं समुचित विधियों का प्रयोग कर सकेंगे।
2. हिन्दी भाषा एवं साहित्य शिक्षण में जनसंचार माध्यमों के प्रयोग की आवश्यकता को समझकर उनका अपने शिक्षण में प्रयोग कर सकेंगे।
3. हिन्दी शिक्षण- अधिगम में प्रयोग किए जा सकने वाले साधनों एवं सामग्री का उपयोग कर सकेंगे।
4. अपने विद्यार्थियों के अधिगम का समुचित मूल्यांकन कर सकेंगे।

इकाइयों की संख्या 5 **सप्ताह 15**

Head/Dean
विभागाध्यक्ष एवं संकाय अध्यक्ष
शिक्षा विभाग/Deptt. of Education
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007
University of Delhi, Delhi-110007

इकाई 1 हिन्दी व्याकरण शिक्षण एवं जनसंचार **सप्ताह 3 = 6 घंटे**

- हिन्दी भाषा शिक्षण में व्याकरण का स्थान, महत्व एवं उपयोगिता, शिक्षण उद्देश्य तथा विधियाँ
- हिन्दी भाषा और जनसंचार, जनसंचार के विविध रूप, जनसंचार माध्यमों की भाषा और विद्यार्थियों की भाषा पर उसका प्रभाव, हिन्दी शिक्षण में जनसंचार माध्यमों की भूमिका

इकाई 2 साहित्य- शिक्षण 1 **सप्ताह 3 = 6 घंटे**

- भाषा और साहित्य- अन्तःसंबंध और भिन्नता, साहित्य के सौन्दर्यबोध के तत्व
- कविता का रसास्वादन- महत्व, उद्देश्य, आस्वाद के धरातल
- कविता- शिक्षण के पक्ष: भाव एवं कला पक्ष, शिक्षण-विधियाँ, आस्वादन में शिक्षक की भूमिका,
- सौंदर्यबोध विकासक युक्तियाँ, मूल्यांकन

इकाई 3 साहित्य- शिक्षण 2 **सप्ताह 3 = 6 घंटे**

- गद्य शिक्षण- महत्व, उद्देश्य गद्य विधाओं के विविध रूप (निबंध एवं निबंधेतर)
- गद्य शिक्षण- विधियाँ, गहन अध्ययननिष्ठ पाठ एवं विस्तृत अध्ययननिष्ठ पाठों की शिक्षण विधि में अंतर
- निबंध शिक्षण
- निबंधेतर गद्य शिक्षण
- गद्य शिक्षण का मूल्यांकन

इकाई 4 हिन्दी-शिक्षण: साधन और सामग्री **सप्ताह 3 = 6 घंटे**

- हिन्दी पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकें- हिन्दी पाठ्यक्रम का आलोचनात्मक अध्ययन, पाठ्यपुस्तकों तथा पूरक पुस्तकों का महत्व, उद्देश्य, विशेषताएँ, पाठ्यपुस्तकों का समीक्षात्मक विश्लेषण
- हिन्दी शिक्षण में प्रयुक्त शिक्षण उपकरण- शैक्षिक उपकरणों का महत्व एवं उनकी उपयोगिता, उपकरणों के विविध रूप- यांत्रिक एवं अयांत्रिक उपकरण
- हिन्दी शिक्षण में सूचना प्रोद्योगिकी का उपयोग, ई-अधिगम संसाधन, उपकरणों एवं संसाधनों का प्रसंगानुकूल उपयोग

इकाई 5 मूल्यांकन **सप्ताह 3= 6 घंटे**

- मूल्यांकन की संकल्पना, महत्व एवं विधियाँ, उद्देश्यनिष्ठ मूल्यांकन की आवश्यकता, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन, मौखिक/ लिखित परीक्षण, परीक्षण प्रश्नों के प्रकार एवं उनकी निर्माण प्रक्रिया,सभी प्रकार के प्रश्नों के निर्माण का अभ्यास
- विद्यार्थियों के भाषा अधिगम में सामान्य त्रुटियाँ, निदानात्मक एवं उपचारात्मक कार्य

Head/Dean
विभागाध्यक्ष एवं संकाय अध्यक्ष
शिक्षा संकाय/Deptt. of Education
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007
University of Delhi, Delhi-110007

प्रस्तावित प्रायोगिक/ परियोजना कार्य (कोई दो)

1. कल्पना प्रधान एवं भावप्रधान मौलिक निबंध लेखन के लिए विषय सूची निर्माण तथा उनमें से किन्हीं दो विषयों पर निबंध लेखन
2. पाठ्य पुस्तकों में निर्धारित पाठों की अंतर्वस्तु से मिलती- जुलती रचनाओं का संकलन
3. पाठ्यपुस्तकों में निहित अन्तःकथाओं का संकलन
4. पाठ्यपुस्तकों में संकलित मुहावरों, लोकोक्तियों का स्वतंत्र प्रयोग एवं उनके अर्थ से मिलते जुलते मुहावरों, लोकोक्तियों का संकलन
5. पाठ्यपुस्तकों में निर्धारित पाठों में से किसी एक के प्रतिपाद्य विषय का चयन कर परियोजना निर्माण

नोट: उपरोक्त के आधार पर, शिक्षक अपनी स्वयं की प्रासंगिक परियोजनाएँ/असाइनमेंट डिज़ाइन कर सकता है।

अनिवार्य/ अनुशंसित सन्दर्भ ग्रन्थ:

- अज्ञेय, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन (2010), वत्सल निधि प्रकाशन माला: संविति, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली
- सिंह, निरंजन कुमार (1981) माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
- गोस्वामी, कृष्ण कुमार एवं शुक्ल देवेन्द्र (1992), साहित्य शिक्षण, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, मद्रास
- चतुर्वेदी, रामस्वरूप (2005), हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली
- तिवारी, पुरुषोतम (1992), हिन्दी शिक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी
- पाण्डेय, रामशकल (1993), हिन्दी शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- प्रसाद, केशव (1976), हिन्दी शिक्षण, धनपत राय एंड संस, दिल्ली
- बाछोतिया हीरा लाल (2011), हिन्दी शिक्षण: संकल्पना और प्रयोग, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली
- नागोरी,शर्मा एवं शर्मा (1976) हिन्दी भाषा एवं साहित्य शिक्षण, राजस्थान प्रकाशन
- लहरी,रजनीकान्त (1975), हिन्दी शिक्षण, राम प्रसाद एंड संस, आगरा
- सिंह, निरंजन कुमार (1981) माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
- सिंह, दिलीप (2007), भाषा, साहित्य और संस्कृति शिक्षण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

Head/Dean
विभागाध्यक्ष एवं संकाय अध्यक्ष
शिक्षा संकाय/Deptt. of Education
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007
University of Delhi, Delhi-110007

- सिंह संध्या(समन्वयक) (2019), भाषा- शिक्षण हिन्दी भाग- 2, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

अतिरिक्त सन्दर्भ ग्रन्थ:

- अग्निहोत्री रमाकांत, खन्ना अमृतलाल (2016), भाषा एवं भाषा शिक्षण खंड 2, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
- अग्निहोत्री रमाकांत, खन्ना अमृतलाल (2023), भाषा एवं भाषा शिक्षण खंड 3, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
- कुमार कृष्ण(2004), बच्चे की भाषा और अध्यापक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली
- तिवारी, भोलानाथ(1990), हिन्दी भाषा शिक्षण, लिपि प्रकाशन, दिल्ली
- सुरेश कुमार (2001), शैलीविज्ञान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

शिक्षण- अधिगम प्रक्रिया: पाठ्यक्रम संव्यवहार के लिए अंतःक्रियात्मक शिक्षणशास्त्रीय पद्धतियाँ यथा कक्षा- चर्चाओं, पठन सामग्री पर आधारित सामूहिक अधिगम कार्यों, विमर्शात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहन दिया जाएगा।

आकलन- पद्धति: आकलन अपनी प्रकृति में निर्माणात्मक (फार्मेटिव) होगा और उसमें विद्यार्थियों की सहभागिता, व्यक्तिगत एवं सामूहिक कार्य तथा प्रदत्त कार्य (असाइनमेंट) दिए जाएंगे। संकलनात्मक (सम्मेटिव) मूल्यांकन सेमेस्टर के अंत की परीक्षाओं से होगा।

Head/Dean
विभागाध्यक्ष एवं संकाय अध्यक्ष
शिक्षा विभाग/Deptt. of Education
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007
University of Delhi, Delhi-110007